Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर रूढ़िवादिता का प्रभाव पढता है?

[1]सुमन सौरभ, [2]डॉ.यशपाल सिंह
[1]शोध छात्र, [2]सहा प्राध्यापक
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय,नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ – 492101

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक विकास की आधारशिला होती है। यह व्यक्ति को आत्मनिर्भर, जागरूक एवं सशक्त बनाती है। विशेष रूप से बालिका शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की कुंजी मानी जाती है, क्योंकि शिक्षित महिला केवल स्वयं का ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज का मार्गदर्शन करती है। भारत जैसे विकासशील देश में बालिका शिक्षा को संवैधानिक एवं नीतिगत स्तर पर विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(क) के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निरूशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, समग्र शिक्षा अभियान, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना जैसी अनेक योजनाएँ बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु लागू की गई हैं। फिर भी यह एक कड़वी सच्चाई है कि ग्रामीण भारत में आज भी बालिका शिक्षा अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक बाधाओं से घिरी हुई है। बालिकाएँ विद्यालय में नामांकन तो करती हैं, परंतु माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते बड़ी संख्या में पढ़ाई छोड़ देती हैं।

भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम माना गया है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत में शिक्षा का प्रसार न केवल मानव विकास के सूचकांकों को सुधारने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह सामाजिक संरचना एवं लैंगिक समानता को पुनर्निर्मित करने में भी केंद्रीय भूमिका निभाता है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति अवश्य की, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की स्थिति आज भी अनेक चुनौतियों से घिरी हुई है।[1] ग्रामीण समाज में बालिकाओं को दी जाने वाली शिक्षा केवल विद्यालयों की उपस्थिति से नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक धारणाओं, आर्थिक संसाधनों, पारिवारिक उत्तरदायित्वों, और सामाजिक–सांस्कृतिक नियंत्रणों से निर्धारित होती है।

सारणी क्रमांक 4.1
क्या बालिका शिक्षा पर रूढ़िवादिता का प्रभाव पढता है?

उत्तरदाता के विचार	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	योग (पुरूष+ महिला)	प्रतिशत
हाँ	78	15.60	100	20.00	178	17.80

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

नही	400	80.00	367	73.30	767	76.65
कुछ नही कहा	22	44.00	33	6.7	55	5.55

आंकड़े व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्राप्त

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि बालिका शिक्षा ग्रामीण समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक ढाँचे से गहराई से प्रभावित होती है। विशेषतः नालंदा जिले जैसे अर्ध–ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक रूढ़िवादिता—जैसे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ, घरेलू कार्य–भार, प्रारंभिक विवाह की अपेक्षा, लड़कियों पर बढ़ी हुई सामाजिक निगरानीकृशिक्षा के अवसरों को प्रभावित कर सकती है। अतः इस तालिका के माध्यम से यह समझना महत्वपूर्ण है कि उत्तरदाता रूढ़िवादिता को कितने प्रभावी अवरोध के रूप में देखते हैं।

"हाँ" कहने वाले उत्तरदाता जा रूढ़िवादिता को प्रभावकारी मानने वाले सारणी के अनुसार कुल 17.80% उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि रूढ़िवादी मान्यताएँ बालिका शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं। पुरुषों में यह प्रतिशत 15.60%, जबकि महिलाओं में 20.00% है। महिलाओं का अधिक प्रतिशत क्यों ? क्योकि महिलाएँ स्वयं लैंगिक भेदभाव को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करती हैं। ग्रामीण परिवारों में उनके ऊपर घरेलू जिम्मेदारियाँ, भाईदृबहनों की देखभाल, खेतदृमजदूरी में सहायता अधिक अपेक्षित होती है। विद्यालय जाने में सुरक्षा, दूरी, परिवार की सहमति जैसी बाधाएँ वे अधिक वास्तविक रूप से अनुभव करती हैं'[1]'. इसलिए महिलाओं द्वारा इस समस्या की पहचान अधिक स्पष्ट है। पुरुषों में यह उत्तर अपेक्षाकृत कम मिलने का अर्थ यह हो सकता है कि वे सामाजिक वास्तविकताओं को उतनी गहराई से नहीं देख पाते जितना महिलाएँ।

"नहीं" कहने वाले उत्तरदाता — रूढ़िवादिता अब बाधक नहीं सबसे बड़ा वर्ग कृ 76.65% — का मानना है कि रूढ़िवादिता अब बालिका शिक्षा की प्रमुख बाधा नहीं है। पुरुषों में यह आंकड़ा 80.00%, जबकि महिलाओं में 73.30% है। इसका क्या संकेत है? सामाजिक परिवर्तन : ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रति परिवारों का रुझान बढ़ रहा है। सरकारी योजनाएँ जैसेकृसाइकिल योजना, पोशाक योजना, कस्तूरबा विद्यालयकृने सामाजिक सोच को बदला है'[2]'.लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धियों ने परिवारों में विश्वास पैदा किया है। पुरुषों की तुलना में महिलाएँ अधिक आलोचनात्मक दृष्टि से स्थिति को देखती हैं, इसलिए वे "नहीं" उत्तर देने में थोड़ी कम हैं। हालाँकि— इतना अधिक प्रतिशत "नहीं" देने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि रूढ़िवादिता पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। बल्कि यह सामाजिक बदलाव की दिशा को दर्शाता है, जहाँ पुरानी मान्यताएँ कमजोर हो रही हैं, परंतु पूरी तरह समाप्त नहीं।

"कुछ नहीं कहा" कुल 5.55% उत्तरदाता किसी भी पक्ष में स्पष्ट मत नहीं देते। इनका महत्त्व दो कारणों से है: ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–सांस्कृतिक दबाव के कारण कई लोग संवेदनशील प्रश्नों पर

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

अपनी राय खुलकर नहीं देते। विशेषकर महिलाओं (6.70%) में यह संकोच अधिक हैकृयह दर्शाता है कि वे समस्या को जानती हैं पर उसे कहने में हिचकती हैं। यह स्वयं ग्रामीण लैंगिक–संरचना का एक प्रमाण है।

सारणी क्रमांक 4.2

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति का अच्छी है।

उत्तरदाता के विचार	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	योग (पुरूष+महिला)	प्रतिशत
हाँ	359	72.00	433	86.60	792	79.30
नही	62	12.30	48	9.6	110	11.05
कुछ नही कहा	79	15.70	19	3.8	98	9.75

आंकड़े व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्राप्त

ग्रामीण भारत में बालिका शिक्षा की स्थिति अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से निर्मित होती है। नालंदा जैसे जिले में, जहाँ सामाजिक चेतना, शैक्षिक प्रसार, और सरकारी योजनाएँ निरंतर सक्रिय रही हैं, वहाँ बालिकाओं के लिए शैक्षणिक अवसरों में गत दो दशकों में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया है। इस तालिका के माध्यम से यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आम ग्रामीण उत्तरदाता आज की स्थिति को किस रूप में देखते हैंकृक्या वे मानते हैं कि बालिका शिक्षा की दशा सचमुच "अच्छी" हो चुकी है, या अभी भी इसमें सुधार की आवश्यकता है? इसी प्रश्न का उत्तर यह सारणी प्रस्तुत करती है।

(ख) "हाँ" कहने वाले उत्तरदाता (79.30%) – सकारात्मक धारणा का प्रबल पक्ष

सारणी में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कुल 79.30% उत्तरदाताकृयानी हर 10 में से लगभग 8 लोगकृयह स्वीकार करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति अच्छी है। लैंगिक दृष्टि से देखने पर दो अलग–अलग प्रवृत्तियाँ स्पष्ट दिखती हैं— पुरुष उत्तरदाताओं में 72% स्थिति को अच्छा मानते हैं। महिला उत्तरदाताओं में 86.60% इसे अच्छा माना हैकृजो पुरुषों की अपेक्षा अत्यंत उच्च है।

यह उच्च सकारात्मकता किन कारणों से निर्मित हुई है? सरकारी योजनाओं का प्रभावकृजैसे मिड–डे–मील, पोशाक योजना, छात्रवृत्ति, साइकिल योजना आदि ने बालिकाओं के विद्यालय जाने की दर में वृद्धि की है। अनेक अध्ययनों में इसका सकारात्मक प्रभाव प्रमाणित हुआ है'1'।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV) ने मुश्किल पृष्ठभूमि वाली लड़कियों को आवासीय शिक्षा उपलब्ध कराई'2'। विद्यालयों का आधारभूत ढाँचा बेहतर हुआकृविशेषकर अलग शौचालय

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

होने से लड़कियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। महिलाओं द्वारा इस बदलाव को अधिक प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता है। समाज में लैंगिक सोच में परिवर्तनकृलड़कियों के प्रदर्शन ने यह साबित किया है कि वे उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो सकती हैं। इस सामाजिक परिवर्तन ने परिवारों के दृष्टिकोण को बदला है'3'।

महिलाएँ प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर उत्तर देती हैं, इसलिए उनकी सकारात्मकता मात्र धारणात्मक नहीं बल्कि अनुभवजन्य (experiential) है। महिला उत्तरदाताओं का उच्च प्रतिशत क्या संकेत देता है? महिलाएँ शिक्षा को अपनी आत्मनिर्भरता, सम्मान और सामाजिक गतिशीलता का स्रोत मानती हैं। अतः वे अधिक उत्साह और स्पष्टता के साथ कहती हैं कि बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति वास्तव में बेहतर है। यह तथ्य शोध के लिए महत्त्वपूर्ण है कि महिलाओं का अनुभव पुरुषों से अधिक जमीनी और वास्तविक है, इसलिए यह आंकड़ा ग्रामीण महिला दृष्टिकोण की प्रामाणिकता को उजागर करता है। "नहीं" कहने वाले उत्तरदाता (11.05%) चुनौतियों की ओर इशारा करने वाला वर्ग कुल 11. 05% उत्तरदाताओं ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की स्थिति अभी भी "अच्छी" नहीं है। इसमें भी— पुरुष 12.30% महिलाए 9.60% यानी महिलाओं की तुलना में पुरुषों की नकारात्मक राय अधिक है। यह नकारात्मकता किन बाधाओं से प्रभावित है? **विद्यालय की दूरी** अभी भी कई गाँव ऐसे हैं जहाँ प्राथमिक विद्यालय तो है, पर उच्च विद्यालय दूर होने के कारण लड़कियों के नियमित शिक्षा ग्रहण में बाधा आती है।[4] **सुरक्षा की चिंता** ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक निगरानी और सुरक्षा को लेकर परिवारों की चिंता अभी कम नहीं हुई है। **आर्थिक तंगी** कई गरीब परिवारों में लड़कियों का समय घरेलू कार्यों में जाता है।

शिक्षकों की अनुपस्थिति/गुणवत्ता समस्या शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर नहीं हुई है। **कमजोर अवसंरचना** जिन विद्यालयों में भवन, कक्ष, या शिक्षण संसाधन कम हैं, उनमें शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है। महिलाएँ कम नकारात्मक क्यों? क्योंकि वे परिवर्तन को निकटता से अनुभव करती हैं और शिक्षा को सशक्तिकरण के रूप में देखती हैं। वे बाधाओं को जानती हैं पर साथ ही सुधार को भी अधिक महसूस करती हैं।

"कुछ नहीं कहा" उत्तरदाता (9.75%) तटस्थ/अनिश्चित वर्ग इस श्रेणी में भी लैंगिक भिन्नता महत्वपूर्ण है। पुरुष 15.70% महिलाएँ 3.80% यह दर्शाता है कि पुरुष उत्तरदाता प्रायः अस्पष्ट या अस्थिर राय रखते हैं, जबकि महिलाएँ स्थिति पर अधिक स्पष्ट दृष्टिकोण रखती हैं। तटस्थता के संभावित कारण:

- **जानकारी का अभाव** – कई पुरुष घरदृपरिवार की शिक्षा संबंधी जिम्मेदारियों में सीधे नहीं जुड़े होते।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

- **सामाजिक संकोच** – कुछ लोग संवेदनशील प्रश्नों पर कुछ कहने से बचते हैं।
- **अनुभवजन्य दूरी** – स्कूल और बालिकाओं की शैक्षिक गतिविधियों में महिलाओं की संलिप्तता अधिक होती है, इसलिए पुरुषों में अस्पष्टता अधिक है।

यह वर्ग दर्शाता है कि ग्रामीण समाज में शिक्षा संबंधी मुद्दों पर अभी भी पूर्ण पारदर्शिता और स्पष्टता विकसित नहीं हुई है। सारणी का बहुआयामी विश्लेषण बताता है कि ग्रामीण नालंदा में बालिका शिक्षा की स्थिति उल्लेखनीय रूप से सुधरी है। 79.30% का "हाँ" कहना सामाजिक परिवर्तन की दिशा का स्पष्ट प्रमाण है। महिलाएँ स्थिति को पुरुषों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक मानती हैं, जिससे संकेत मिलता है कि परिवर्तन का वास्तविक लाभ महिलाओं ने अधिक महसूस किया है। नकारात्मक उत्तर (11.05%) यह दर्शाते हैं कि सुधार असमान हैं—कुछ गाँव अभी भी पिछड़े हुए हैं। तटस्थ उत्तरों (9. 75%) का पुरुषों में अधिक होना बताता है कि महिलाएँ मुद्दे को अधिक सीधे अनुभव करती हैं, जबकि पुरुष अपेक्षाकृत दूरी पर हैं।

निषकर्ष :–

सारणी क्रमांक 4.1 का संयुक्त विश्लेषण निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि रूढ़िवादिता का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है लगभग पाँचवें हिस्से (17.80%) का मानना कि रूढ़िवादिता अभी भी बाधक है यह दर्शाता है कि पारंपरिक सोच अभी भी कुछ परिवारों में गहरी बनी हुई है । सामाजिक परिवर्तन जारी है 76.65% लोगों का रूढ़िवादिता को गैर–बाधक मानना बताता है कि

नयी पीढ़ी में दृष्टिकोण बदल रहा है, लड़कियों की शिक्षा को अब समाज स्वीकार रहा है। पुरुष–महिला दृष्टिकोण में अंतर अब भी व्याप्त है। महिलाएँ अधिक संख्या में रूढ़िवादिता के प्रभाव को पहचानती हैं। पुरुषों में जागरूकता बढ़ी है, परंतु वे सामाजिक समस्याओं की गंभीरता को उतना अनुभव नहीं करते। तटस्थ उत्तरदाता स्थिति के जटिल सामाजिक आयाम की ओर संकेत करते हैं। कुछ उत्तरदाता मत नहीं दे पाए यह ये यह दर्शाता है कि समाज में कुछ मुद्दे अभी भी खुले विमर्श का विषय नहीं बन पाए हैं। यह तालिका स्पष्ट रूप से बताती है कि नालंदा जिले के ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक रूढ़िवादिता का प्रभाव कम हुआ है, परंतु समाप्त नहीं। महिलाएँ इसे अधिक गंभीरता से महसूस करती हैं, और यह लैंगिक अनुभवों की असमानता को उजागर करता है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक परिवर्तन की गति सकारात्मक है, परंतु रुक–रुक कर और आंशिक रूप से जारी है।

सारणी क्रमांक 4.2 समग्र रूप से यह तालिका ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक जागरूकता, सरकारी योजनाओं के प्रभाव, और सामाजिक परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। इस तालिका से यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि नालंदा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति "काफी हद तक अच्छी" और "सकारात्मक" है। हालाँकि, कुछ संरचनात्मक व सामाजिक

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January - 2025 | Page 91-96

बाधाएँ अभी भी शेष हैं, इसलिए यह कहना अधिक तार्किक होगा कि स्थिति सुधार रही है, लेकिन समान रूप से नहीं। यह विश्लेषण आपके शोध के अंतिम निष्कर्ष भाग में यह तर्क स्थापित करने में सहायक होगा कि– बालिका शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन हो रहा है, परंतु इसके लिए निरंतर नीतिगत, सामाजिक और अवसंरचनात्मक प्रयास आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. Kumar, Ashok- Gender and Education in Rural Bihar- Patna University Studies, 2019-
2. Government of Bihar- Annual Educational Report, Department of Education, 2022-
3. Nanda, Meera- Tradition and Gender Norms in Rural India- Delhi: Sage Publications, 2017-
4. Government of Bihar- Annual Education Report- Department of Education, 2022-
5. Ministry of Education- Evaluation of KGBV Scheme- Government of India, 2021-
6. Singh, R- K- Gender and Educational Change in Rural India- Delhi: Sage Publications, 2018-
7. Jha, Jyotsna, and Praveen Kumar- School Access and Girls* Education in Bihar- Patna University Press, 2020-